ये ग्वालियर गाँव भी अच्छा है और जहाँ विश्वकिशोर जाते हैं, क्या नाम है? (किसी भाई ने कहा– राजकोट) राजकोट भी अच्छा है सर्विस के लिए। बहुत गर्मी (है), जहाँ–2 कुछ ठण्डाई है तहाँ–2 से निकल फिर नया–2 सेन्टर खुलना है। पादरी वगैरह होते हैं ना, उनको भी अगर समझाया जाए, रास्ता बताया जाए कि तुम उस क्राइस्ट को याद करते हो। उसका दूसरा भी नाम क्या है? ईशू (किसी ने कहा– ईसा)। ज़रूर वो भी तो जिसका बच्चा है तो वर्सा तो उनसे मिलेगा, कोई क्राइस्ट से नहीं मिलेगा। तो क्यों न बाप को याद करना है! उनका भी तो वो बाप है ना ; क्योंकि अगर लिबरेट भी करेगा तो वो बाप करेगा ना। अभी तो शैतान का राज्य चल रहा है। लिबरेट करेगा तो क्यों न उनको याद करें, उनसे वर्सा लेवें ! तो कई–2 प्वाइंट्स, सभी प्वाइंट्स उस समय में याद नहीं पड़ती हैं, मिस भी होती हैं। तो नॉलेज किसको भी दिया जा सकता है; क्योंकि मुसलमान भी तो अल्लाह को बाप कहेंगे ना। सभी गॉड को फादर तो ज़रूर कहेंगे; (क्यों)कि उनका नाम ही है गॉड फादर। तो जो फादर है तो सर्वव्यापी तो हो ही नहीं सकता है। सिर्फ अगर गॉड फादर कोई कहे। ये भी कहे गॉड फादर, ये भी कहे गॉड फादर अंग्रेजी में, तो फादर तो हुआ ना। अच्छा, फादर तो नई दुनिया ही स्थापन करते हैं; क्योंकि ये दुनिया ही पुरानी है। तो फादर को याद करने से फादर से इनहेरिटेन्स मिलेगा और समझा सकते हैं कि फादर से तो दो इनहेरिटेन्स मिल सकते हैं। फादर को याद करने से फादर के पास जाकर पहुँचेंगे। जब सभी वहाँ जाकर पहुँचेंगे, जाएँगे तो सभी जाएँगे ना, कोई एक थोड़े ही जाएँगे ; क्योंकि लिबरेट आ करके करते हैं तो सबको करते हैं। हाँ, उनको अगर कोई याद करेगा...। उनको सबको लिबरेट तो करना है; परन्तु जो उनको याद करेगा, उनसे वर्सा पा सकता है। वो बाप का परिचय देने से ये जो कहते हैं– भई, अपन को ये मानते हैं, ये मानते हैं, फलाना मानते हैं, वो बात निकल जाती है, अगर कोई युक्ति से समझाने वाला हो तो। हाँ, ये समझा सकते हैं– ये नॉलेज तुमको कहाँ से मिलती है ? तो उनको बताया जा सकता है कि एडम द्वारा ही तो वो नॉलेज देंगे ना। नहीं तो किस द्वारा नॉलेज देंगे ? जबकि उसको वर्सा देना है तो ज़रूर कोई द्वारा तो देंगे ना; क्योंकि इनकारपोरियल है। दिखलाया भी जाता है कि ब्रह्मा द्वारा। विष्णु–शंकर की तो बात ही नहीं है। तब किसके द्वारा? क्योंकि विष्णु में तो राधे–कृष्ण भी आ जाते हैं। ऐसे थोड़े ही है और कोई उठाएँगे, रामचंद्र को उठाएँगे। तो नॉलेज देने की बड़ी सहज है, सिर्फ उनमें अच्छी युक्तियाँ हों। जिसमें युक्ति हो और ख़जाने का भण्डारा भरा हो तो वो देने बिगर रह नहीं सकते हैं, उनको सुख नहीं आएगा। न है वो बात ही दूसरी है; पर जिनके पास भण्डारा भरपूर है वो टिकलू–2 करते रहेंगे। रास्ता ढूँढ़ते रहेंगे कि हम कहाँ सर्विस करें, कहाँ सर्विस करें, नाम बाला हो। तो सर्विस रहती है ना। बहुत आते हैं, सर्विस का चांस मिलता है। तो ऐसी–2 जगह में

प्रदर्शनी में या ये जहाँ भी ऐसे अगर दुकान भी निकाला है तो...। नया गाँव है, अच्छा गाँव है। पीछे....कोई न कोई भगवान का लाल निकल आएगा। भगवान के लाल तो तुम ब्राह्मण हो, और तो कोई लाल है नहीं। लाल कहा ही जाता है बच्चे को। तो कोई न कोई लाल निकल आएँगे। आपे ही जो सर्विस करते हैं उसको देवता कहा जाता है। बाबा समझाते हैं। जिसको कहने से काम करते हैं तो मनुष्य है। कहने से भी जो काम न करे तो फिर उनको और थर्ड क्लास में रखा है। ...माना भगवान को याद करते हैं, किस भी प्रकार का। भक्ति के अनेक प्रकार हैं। ज्ञान का तो एक ही प्रकार है। ये ड्रामा अनुसार अनेक प्रकार रखे हुए हैं। सो भी तुम समझते हो कि भक्ति कहाँ से कहाँ तक ज़रूर चलनी ही है और दिन–प्रतिदिन भक्ति तमोप्रधान होनी ही है और दुनिया भी दिन–प्रतिदिन तमोप्रधान होनी है, पुरानी होनी ही है। दिन–प्रतिदिन दुःख जास्ती होना ही है; क्योंकि उतरते रहते हैं ना। बाद में इस घोर अंधियारे में जाते रहते हैं ना तो इसमें तो दुःख ही होंगे। तो इस दुनिया में अनेक मत है और श्रीमत तो गाई हुई है, सिर्फ बेचारे मूँझ गए हैं कि श्रीमत किसकी? बच्चों को दादा की पहचान देनी है। मात–पिता की पहचान देनी है। मात–पिता की तो क्या, बाप की ही पहचान देनी है। देखो, ये कोई–2 तो इन पार्टियों को भी समझाते हैं, उनके समझ में आती है और कोई–2 के समझ में नहीं आएगी। ऐसे नहीं कि सब समझने की कोशिश में रहेंगे या दिखलाएँगे। कोई बिल्कुल नहीं दिखलाएँगे। ... नहीं जानते, हमको फुर्सत नहीं है। (म्युज़िक बजा)

मीठे–2, सिकीलधे बच्चे, ब्राह्मण कुलभूषण, स्वदर्शनचक्रधारी। देखो, टाइटिल कितने अच्छे देते हैं। अभी सर्वोत्तम ब्राह्मण कुलभूषण, पीछे स्वदर्शनचक्रधारी। तो हर एक अपन को समझते तो हैं ना। ये भी समझते हैं कि हम शिवबाबा के पौत्रे या पौत्री हैं। शिवबाबा को याद करने से शिवबाबा से वर्सा ले रहे हैं। डाडे की मत पर चल डाडे का वर्सा मिल रहा है। ये सब ख्याल तो रहना है ना। वर्सा कोई छोटा तो नहीं है, बहुत भारी वर्सा है। 21 पीढ़ी और सदा सुख का वर्सा और इसमें कितना पुरुषार्थ करना चाहिए। है भी बहुत सहज; क्योंकि बाप कहते हैं कि मैं गरीबों को ये अपना वर्सा देता हूँ। इसलिए सहज कर दिया है। तो सहज होने से फ्री। बच्चों को बहुत पुरुषार्थ करना चाहिए। ऐसे पुरुषार्थी बच्चों प्रति यादप्यार और गुडनाइट।